International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 28-07-2024, Accepted: 27-08-2024, Published: 11-09-2024
Volume 6, Issue 2, 2024, Page No. 1-4

साहित्य की मार्क्सवादी दृष्टि और राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास

पुष्पा बुढलाकोटी
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
साहित्य अध्ययन और आलोचना पद्दतीयों में विभिन्न विचारों एवं दर्शनों का प्रभाव परिलक्षित होता रहा है अध्येता विभिन्न लेखकों के रचनाकर्म को अलग अलग दृष्टिकोणों में परखने और समझने की कोशिश करते रहे हैं। मार्क्सवादी चिंतन में विचारधारा को एक नजरिया माना गया है। यह नजरिया घटनाओं, परिवर्तनों और स्थितियों के विश्लेषण और समझने का आधार प्रस्तुत करता है। आज के संदर्भ में यह एक ऐसी चेतना है जो अपने सार रूप में राजनीतिक है। यह चेतना समाज में अलग–थलग वर्गों के स्वार्थों से जुड़ी होती है, यानी इसका चरित्र वर्गीय होता है। इतिहास में भी हर वस्तुगत स्थिति को देखने में, उसको समझने में और उसका विवचेन करने में इस वर्गीय चेतना की अंह भूमिका होती है। यह बात जग जाहिर है कि इतिहास हमारी अतीत की चेतना को रूपाकार देता है, इसके साथ ही यह भावी निर्माण के लिए रास्ता भी सुझाता है। इसीलिए इतिहास में विचारधारा की भूमिका को बार–बार रेखांकित किया गया है। मार्क्सवाद भी एक विचारधारा है। इसका आधार वैज्ञानिक और वस्तुवादी है। इसमें चेतना को उचित महत्व देते हुए भी अंतिम विश्लेषण में भौतिक स्थितियों को निर्णायक माना गया है।
मार्क्सवाद आधुनिक चिंतन की एक भौतिवकवादी विचारधारा है जिसने साहित्यिक आलोचना और रचनात्मक लेखन को समृद्ध किया है। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार 'साहित्य ही समाज का दर्पण है' अगर इस बात को गहराई से जाने तो हमें समाज का वास्तविकता प्रतिबिंब तब दिखाई देता है, जब हम साहित्य को मार्क्सवादी दृष्टि से देखने का प्रयास करते हैं। मार्क्सवादी साहित्य समाज के शोषित और पीड़ित वर्गों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिसमें वर्ग संघर्ष, आर्थिक असमानता, और सामाजिक न्याय की मांग की जाती है। 19–20 वीं शताब्दी में समाजवादी और साम्यवादी विचारधाराओं के प्रसार के साथ, हिन्दी साहित्य ने भी इन विचारों को आत्मसात किया और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों को अपने केंद्र में रखा। मार्क्सवादी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त शोषण, असमानता और अन्याय को उजागर करने का प्रयास किया।
महापंडित राहुल सांकृत्यायन हिन्दी साहित्य के जगत में बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न और यात्राप्रेमी साहित्यकार के रूप में जाने जाते है। उन्होंने साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी लेखनी द्वारा समाज के नए आयामों में जैसे सामाजिक–राजनीतिक–आर्थिक,सांस्कृतिक एवं साम्यवादी–मार्क्सवादी दृष्टिकोण एवं नारी चिंतन को अपने साहित्य का विषय बनाया है। उनके साहित्य में मार्क्सवादी दृष्टि का व्यापक और गहन विश्लेषण पाया जाता है। उन्होंने समाज की वास्तविकताओं को अपने उपन्यासों में जिस प्रकार उकेरा है, वह उन्हें एक सशक्त और विचारशील लेखक के रूप में स्थापित करता है। उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं हैं, बल्कि वे समाज सुधार का एक महत्वपूर्ण साधन भी हैं। मार्क्सवादी दृष्टि से उनकी रचनाओं का अध्ययन हमें समाज की गहराईयों को समझने और उनमें सुधार लाने की प्रेरणा देता है। उनके उपन्यासों में समाज की असमानता, शोषण और अन्याय के खिलाफ एक सशक्त आवाज उठाई गई है, जो आज भी प्रासंगिक है।
इस शोध–आलेख के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि राहुल सांकृत्यायन ने अपने साहित्य के माध्यम से न केवल समाज की समस्याओं को उजागर किया है, बल्कि उनके समाधान के लिए भी सुझाव दिए हैं। उनकी रचनाएँ हमें समाज को बेहतर बनाने की प्रेरणा देती हैं, और साहित्य के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की शक्ति को दर्शाती हैं।

मूल शब्दः साम्यवाद, मार्क्सवाद, वर्ग–संघर्ष, नयी कहानी, गणतंत्र, स्वर्ग, नरक, शोषण, असमानता, अन्याय, दुर्दशा

उद्देश्य

- मार्क्सवादी साहित्य का मूल उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं का विश्लेषण करना है। यह दृष्टिकोण साहित्य को केवल एक रचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे समाज की भौतिक स्थितियों और वर्ग संबंधों का प्रतिबिंब मानता है। मार्क्सवादी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त शोषण, असमानता और अन्याय को उजागर करने का प्रयास किया।
- साहित्य की मार्क्सवादी दृष्टि एक ऐसा दृष्टिकोण है जो साहित्य के विश्लेषण और मूल्यांकन के लिए मार्क्सवादी सिद्धांतों का उपयोग करता है। इस दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि साहित्यिक रचनाएँ किस प्रकार से सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों, वर्ग संघर्षों और ऐतिहासिक विकास के प्रतिबिंब हैं।
- मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार, साहित्यिक रचनाएँ समाज की आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं का प्रतिबिंब हैं। ये रचनाएँ समाज में वर्ग संघर्ष, शोषण, और आर्थिक असमानताओं को उजागर करती है।

मूल आलेख

साहित्य की मार्क्सवादी दृष्टि और राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास
हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी दृष्टिकोण का विकास कई प्रमुख साहित्यकारों और आंदोलनों के माध्यम से हुआ। 1936 में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई, जिसने साहित्य में मार्क्सवादी दृष्टिकोण के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संघ ने सामाजिक और आर्थिक शोषण के खिलाफ आवाज उठाई और साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया। जिसमें प्रमुख लेखक प्रेमचंद, सुमित्रानंदन पंत और मन्नू भंडारी रहें। साहित्य की मार्क्सवादी दृष्टि साहित्य को समाज की आर्थिक, राजनीतिक, और सामाजिक संरचनाओं के संदर्भ में विश्लेषण करने की एक पद्धति है। यह दृष्टिकोण साहित्य को एक ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ में समझने का प्रयास

करता है, जिसमें वर्ग संघर्ष, सामाजिक असमानताएं, और वैचारिक तत्त्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में मुंशी प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य में शोषित और वंचित वर्ग के लोगों के लिए मार्क्सवादी दृष्टि से सहित्यिक रचनाएं लिखी। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में ग्रामीण भारत की विषम परिस्थतियों और किसानों के शोषण की पीड़ा को इन रचनाओं के माध्यम से उजागर किया। उनके गोदान, कफन, और गबन, रंगभूमि जैसी कृतियों में सामाजिक विडंबनाओं के संघर्ष का मार्मिक रूप प्रस्तुत हुआ है।

इसके बाद, 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना ने हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी दृष्टिकोण को और अधिक सशक्त बनाया। इस आंदोलन से जुड़े लेखक, जैसे नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, और अज्ञेय, ने अपनी रचनाओं में सामाजिक न्याय, समानता, और मानवाधिकारों की मांग की। इन लेखकों ने साहित्य को समाज में परिवर्तन का साधन माना और अपनी रचनाओं में वर्ग संघर्ष और शोषण के मुद्दों को प्राथमिकता दी। द्वितीय विश्वयुद्ध और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ने साहित्य को और भी अधिक सामाजिक और राजनीतिक रूप से जागरूक बनाया। इस समय के साहित्यकारों ने मजदूरों, किसानों और निम्न वर्गों के संघर्षों को अपनी रचनाओं में जगह दी। जिनमें प्रमुख लेखक यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, और अज्ञेय रहे।

नई कहानी आन्दोलन एवं मार्क्सवादी दृष्टि

1960 के दशक में हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी दृष्टिकोण का और भी अधिक प्रसार हुआ। लेखक और कवियों ने श्रमिकों, किसानों, और वंचित वर्गों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया। नई कहानी आन्दोलन के प्रमुख लेखकरू कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, और मोहन राकेश, नागार्जुन, मुक्तिबोध, और भीष्म साहनी रहें । इसके अतिरिक्त वर्तमान संदर्भ में आज भी हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी दृष्टिकोण प्रासंगिक है। समकालीन लेखक और कवि सामाजिक और आर्थिक असमानताओं, ग्लोबलाइजेशन, और नवाचार के प्रभावों पर लिख रहे है।

राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों का मार्क्सवादी विश्लेषण

महापंडित राहुल सांकृत्यायन हिन्दी साहित्य के जगत में बहुमुखी प्रतिभा के धनी और सशक्त यात्राप्रेमी साहित्यकार के रूप में जाने जाते है। उन्होंने प्राचीन तथा मध्यकाल और आधुनिककाल से संबंधित मार्क्सवादी दृष्टि के अध्ययनों में तीनों युगों के समाजों के उपयुक्त वर्गीकरण की समस्याओं को भी उठाया है।

उन्होंने एक शेर पढ़ा था–

"सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां?
जिंदगी कर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहां?"[1]

यह शेर उन्हें बार–बार याद आता था इसलिए इस शेर को उन्होंने अपने जीवन में उतार लिया और वे यायावरी की राह पर चलने लगे। उनको यायावर बनाने के लिए यह प्रकरण तो कारण बना ही, उनकी घरेलू परिस्थितियों ने भी इसमें योगदान किया। उन्होंने साहित्य के विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य किया है। उनके साहित्य लेखन का दृष्टिकोण समाज के नए आयामों में जैसे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं साम्यवादी–मार्क्सवादी विचारधारा से परिपूर्ण है। वे 36 भाषाओं के प्रकंड विद्वान माने गए है। इतने विविध भाषाओं का ज्ञान होने से ही उन्हें महापंडित की उपाधि से विभूषित किया गया। उनका सम्पूर्ण जीवन और उनके साहित्य का समग्र लेखन, अपने देश और देशवासियों के लिए था। उन्होंने अपने समय के समाज की परिस्थितियाँ एवं उससे भी आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वप्नदर्शी समाज परिवर्तन के बारे में लिखा। वे यात्रा के दौरान कई देश–विदेशों की बदलती सामाजिक संस्कृति से परिचित थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भी विभिन्न देशों की सामाजिक संरचना को उजागर किया।

ऐसे अप्रतिम राहुल सांकृत्यायन आधुनिक युग के गम्भीर चिन्तक है। उनका चिन्तन पक्ष उत्तरोत्तर विकासशील रहा है। सनातन धर्म विचारक को लेकर मार्क्सवादी गम्भीर चिन्तक तक की उनकी चिन्तन–यात्रा के कई आयाम रहे हैं। वे एक साहित्यकार, इतिहासकार, तत्वान्वेषी, यायावर, दार्शनिक, साम्यवादी मार्क्सवादी, समाजवादी विचारक रहे।

अन्ततः मार्क्सवादी विचारधारा उनके दार्शनिक चिन्तन का आधार बनी है। राहुल के विचारों पर उनके विशाल अनुभव और अध्ययन की छाप स्पष्ट है। मनुष्य के दुःखों का कारण आकाश में नहीं, बल्कि पृथ्वी पर ही है। 1633 ई० की रूस यात्रा में वहाँ की जनता की खुशहाली और वहाँ की समाजवादी व्यवस्था ने उनको विशेष रूप से प्रभावित किया। मार्क्सवाद को उन्होंने सैद्धान्तिक और व्यावहारिक, दोनों रूपों में अभिव्यक्त किया है। श्मार्क्सवाद ही क्योंश, श्भागो नहीं दुनिया को बदलोश, श्दर्शन–दिग्दर्शन आदि ग्रन्थों में उन्होंने मार्क्सवाद के सकारात्मक पक्षों का विवेचन किया है तो श्बाईसवीं सदी, श्जय यौधेयश, श्सिंह सेनापति, श्मधुर स्वप्न आदि रचनाओं में उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा से पोषित आदर्श समाज का काल्पनिक चित्र भी प्रस्तुत किया है। इन रचनाओं में उन्होंने सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों, वर्ग संघर्षों, और ऐतिहासिक विकास को चित्रित किया।

उनकी रचनाओं में मार्क्सवादी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। उनकी कई रचनाएं समाजवादी और साम्यवादी विचारों से प्रेरित हैं। यहाँ कुछ प्रमुख मार्क्सवादी रचनाओं का उल्लेख किया जा रहा है। जिनमें सिंह सेनापति और मधुर स्वप्न उपन्यास के मार्क्सवादी सिद्धांतों का जिक्र किया जा रहा है।

सिंह सेनापतिः मार्क्सवादी दृष्टि

सिंह सेनापति में राहुल जी ने प्राचीन गणराज्य और राजतंत्र की तुलना की है। वे गणतंत्र शासन को अधिक श्रेष्ठ मानते हैं, क्योंकि इसमें शोषण और असमानता की कम संभावना होती है। राहुल जी के अनुसार, गणराज्य एक आदर्श समाज की स्थापना में सहायक हो सकता है, जहां हर व्यक्ति को समान अधिकार और सम्मान मिलता है। इस उपन्यास में बौद्ध व जैन धर्मों के विचारों का मार्क्सवादी जीवन दर्शन है। इसमें ईसापूर्व 500 में गणतंत्रात्मक शासन और वैशाली जनपद तथा तक्षशिला के प्रजातंत्रात्मक शासन का उल्लेख है। जिसमें युद्ध और प्रेम, हास विलास, स्त्री स्वातंत्र्य, समता, बंधुत्व आदि बातों का वैचारिक दृश्य प्रस्तुत है। इसमें प्राचीन जीवन शैली, उत्पादन, रहन–सहन और भोजन तक्षशिला, वैशाली, मगध के रहने वाले लोगों का जीवन प्रस्तुत है। इसमें नायक सिंह बौद्ध विचारों से प्रभावित है। राहुल जी ने राजतंत्र एवं गणतन्त्र शासन प्रणालियों की तुलना की है और राजतन्त्र की अपेक्षा गणतन्त्र शासन व्यवस्था को अत्यंत श्रेष्ठ बताया है। राजतन्त्र में शासक गलत पद्धति से राज्य करता है। भोग में उसे अधिक स्वच्छन्दता होती है। वह देश का सबसे धनी आदमी है। उसके पास अधिक खेती होती है। वह सबसे अधिक दास–दासियों का स्वामी होता है। नित नई–नई तरुण सुन्दरियों से वह अपने अंत:पुर को भरता रहता है। ऐसा हम कह सकते है कि पूँजीवादी शासन प्रणाली में भी कुछ ऐसी व्यवस्था के कारण सभी प्रकार की सुविधाएँ कुछ लोगों तक सीमित रहती है। राजतंत्र में दासों को बेजान वस्तु समझा जाता है। उन्हें खरीदा या बेचा जाता है उनका सौदा होता है क्रय विक्रय के माध्यम से। तक्षशिला के गांधारगण में दास प्रथा नहीं है। स्वामी उन्हें अपने समान मानव समझकर उनके साथ मानवीय पूर्ण व्यवहार एवं सदाचार करते हैं। गणतन्त्र के प्रति उपन्यास के पात्र सिंह का आकर्षण वस्तुतः राहुल जी का ही आकर्षण है।

वे आदर्श समाज के लिए गणतन्त्रीय शासन–प्रणाली का अनुमोदन करते है। इस व्यवस्था में ऊँच–नीच दास स्वामी आर्थिक वैषम्य आदि नहीं रह पाता। "आचार्य बहुलाश्व को आर्य–वर्ण–संम्पत्ति की बहुत चिंता है। इनके नौकरों में कोई कृष्ण वर्ण या अर्ध–कृष्ण–वर्ण नहीं।"[2]

सिंह सेनापति का नायक युवा सिंह विद्या पढ़ने वैशाली से तक्षशिला गया है। वहीं गुरु बहुलाश्व उससे कहते है– "पूर्व में वैशाली ही है, जिस पर हमें गर्व है। और तो सारे रजुल्ले हैं। कुरु, पंचाल, वत्स, कोसल, मगध सारी रजुलितयाँ हैं। वहाँ से आर्यत्व नष्ट हो चुका है। हमारे सप्तसिंधु में चाहे मल्ल में जाओ, मद्र में जाओ या इस पूर्वगंधार में, सभी जगह गण का शासन पाओगे हमारे पूर्वजों के कुछ भाई–बिरादरी जब पूर्व में गये और उन्होंने आर्यों की परंपरा छोड़ कुरु पंचाल के गणों–जनों की जगह रजुल्लियाँ कायम कर लीं, उसी दिन से हमने उन्हें पतित समझ लिया आर्यों का देश यह है, आर्यों का धर्म यहाँ प्रचलित है, आर्यों का वर्णरूप यहाँ मिलता है। हाँ तो वत्स! पूर्व के गण के पुरुषों को इसीलिए हम प्रेम की दृष्टि से देखते हैं। उनके वर्णरूप की संपत्ति हमारी जैसी होती है। महाली लिच्छवि ऐसा ही था, बंधुल मल्ल ऐसा ही था। प्रसेनजित् मुँह के देखने ही से वर्णसंकर मालूम होता था।"[3]

आचार्य की सीख है, शुद्ध वर्ण वाले का सम्मान करो, वर्णसंकर से घृणा करो। शिष्य गुरु की हाँ में हाँ मिलाते हुए उनकी बात में कुछ अपनी बात कहता है– ष्हाँ आचार्य राजे कामुक होते हैं और कामवश हो आर्य, अर्धआर्य, आर्येतर किसी का भेद नही रखते; इसीलिए उनके खून में आर्येतर धारा मिली हुई है। वह वीर्य की प्रधानता मानते हैं।"[4] इस पर गुरु कहते है– "कहीं से एक बार बाँध टूटा नहीं कि पूर्वजों की पीढ़ियों से सुरक्षित की हुई विशेषता, वर्ण–संपत्ति धूल में मिल गयी। जिस अँगुली को साँप ने हँसा, उसे हम काट डालते हैं, जिस डाली में घुन लगा, उसे हम वृक्ष पर रहने नहीं देते। यही वजह है, जो तुम यहाँ सभी स्त्री–पुरुषों को गौरवर्ण पाते हो, सभी के केशों को अग्नि की ज्वाला की भाँति पिंगल, पिशल या पांडुर, सभी की आँखों को नीली या सुवर्ण वर्ण पाते हो। इसके लिए हम पूर्व के गणवालों को कड़ा प्रतिबंध रखना पड़ता है। हमारे यहाँ माता–पिता किसी तरफ से भी बाहर से संबंध नहीं रखने देते। हम अपने–जैसे गणों से बाहर शादी–ब्याह नहीं करते। तो भी इसका अर्थ यह ने कि हमारे यहाँ अर्थआर्य नहीं हैं। आर्येतर काली दासियों हमारे घरों में ज्यादा दिखादी पड़ती है।"[5] गणतंत्र केवल शुद्ध वर्ण वालों के लिए है। उत्तर में अनार्य कम हैं। वे सेवक हैं और उन्हें नागरिक अधिकार नहीं दिये गये। पूर्व में अनार्य ज़्यादा हैं। गंधार में दासप्रथा का चलन था या नहीं था? इस पर आचार्य बहुलाश्व की टिप्पणी–ष्यह खतरे की बात है। बड़े खतरे की बात है। आर्य रुचिर आर्येतर क्षेत्र में जायगा और वहीं से आर्यों की तबाही शुरू होगी। हमारे यहाँ देखो दासप्रथा नहीं है। कुछ आर्येतर कर्मकर–नौकर है। उनको हमारे गणशासन में अधिकार नहीं है। किंतु साथ ही हम उनके शरीर को खरीद–वेध की चीज़ नहीं समझते। वैसे सतलज के इस पार तुमने आर्येतर देखे भी कम होंगे।"[6]

सिंह सेनापति उपन्यास में अहिंसा की व्याख्या करते हुए महावीर कहते हैं–"मन पर संयम, वचन पर संयम, शरीर पर संयम'। "हम हर साँस में हम अगिनित पाप करते हैं। भगवान महावीर के कितने ही श्रावक और श्राविकाएँ चालीस–चालीस, पचास–पचास दिन का अनशन रखते हैं। कितनों ने आमरण अनशन रखकर अपने जीवन का अन्त किया और इस प्रकार अपने पुराने और नये पापों का अन्त किया। यह मार्ग दुर्गम है, कष्टसाध्य है। हमारे सारे दुःखों का कारण पाप है, उसी को दूर करने के लिए कार्य–दंड देना पड़ता है, उसी से बचने के लिए क्षुद्रातिक्षुद्र प्राणियों की हिंसा से बचना पड़ता है। 'भगवान् महावीर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हैं। भूत में जो कुछ था, अब जो कुछ है, भविष्य में जो कुछ होगा, कोई बात उनके ज्ञान में छिपी नहीं है। वह चलते, बैठे–लेटे, सोते–जागते, सदा सब कुछ जानते हैं। हम लोगों को जो बातें ज्ञात नहीं, उन्हें भी सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान् महावीर जानते हैं। वह अपने श्रावकों (शिष्यों) को बतलाते हैं कि सब तरह के प्राणियों की हिंसा से बचना चाहिए और यह भी कि यही स्थूल–सूक्ष्म, चींटी से हाथी तक ही नहीं है, बल्कि जल, पृथ्वी, आग, हवा में सर्वज्ञ क्षुद्रातिक्षुद्र प्राणी हैं। यही नहीं, स्वयं पानी एकेन्द्रिय जीव है, स्वयं पृथ्वी एकेन्द्रिय जीव है।"[7] किसी बात पर एकांततया विश्वास रखने को निगंठ ज्ञातृपुत्र नहीं कहते क्योंकि हर बात एकांत रूप में नहीं, मिश्रित रूप में ही मिलती है। इसीलिए अहिंसा भी एकांत शुद्ध रूप में न पायी जाती और न बर्ती जाती है। इसका खंडन करने के लिए सिंह के पास कोई तर्क नहीं है। वह कुछ समय के लिए महावीर का अनुयायी हो जाता है, फिर उन्हें छोड़कर बुद्ध की शरण में जाता है। राहुल जी ने कारीगरों का उल्लेख किया है, कर्मकरों का उल्लेख किया है। सिंह सेनापति में गंधारों, उत्तर कुरुओं और लिच्छवियों के लिए रंगभेद की नीति उनके लिए लज्जा की नहीं, अभिमान की बात है क्योंकि गणतंत्र की रक्षा शुद्ध रक्त, शुद्ध वर्ण वाले आर्यों के संगठन पर ही निर्भर है।

इस प्रकार सिंह सेनापति में दार्शनिक विचारों में नीति और आदर्श के मध्य द्वंद्व का चित्रण मिलता है। इसमें दिखाया गया है कि कैसे सेनापति अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाता है। सेनापति का व्यक्तित्व करुणामय और मानवतावादी है, जो हर स्थिति में मानवता की रक्षा करने का प्रयास करता है। उपन्यास में संघर्ष और विजय के बीच के संबंध पर भी दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

मधुर स्वप्न मार्क्सवादी दृष्टि

'मधुर स्वप्न' उपन्यास में प्राचीन ईरान के समाज में फैली असमानता और शोषण की कहानी है। इस उपन्यास में राहुल जी ने मजदूर वर्ग की दुर्दशा और उनके संघर्ष को चित्रित किया है। इसके साथ ही, उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि कैसे साम्यवादी विचारधारा एक बेहतर और समान समाज की स्थापना कर सकती है।

इसमें पांचवी छठी शताब्दी के ईरान के राजवंश और प्रजाजन की दार्शनिकता का वर्णन हुआ है। उपन्यास का मुख्य पात्र ईरान का शाहक्वात् अपना धर्म छोड़ मज्दक धर्म का अनुयायी हो जाता है जिस कारण वह राज्यसिंहासन से पदच्युत होता है। कुछ समय पश्चात वह अपने साले शाह तोरमान की मदद से फिर सिंहासन पा लेता है। वहीं दूसरी तरफ ईरान में साम्यवादी दल का नेता अन्दजर्गर मज्दक था। वह केवल सामाजिक विषमता गरीब और अमीर का भेद ही नहीं नष्ट करना चाहता था, अपितु पति–पत्नी के रिश्ते को भी वह 'सम्मिलित पत्नी' के रूप में प्रचारित करना चाहता था। इस कारण ईरान के धर्मगुरु उसके विचारों का खंडन करते है। अंत में सिंहासन के लिए उत्तराधिकार के प्रश्न पर ईरान के धर्मगुरु और मज्दकियों का वाद–विवाद में विरोध होता है। जिस कारण बादशाह कवात् पुत्र खुसरों मज्दक धर्म के अनुयायी मज्जदकों का वध कर देता है।

मधुर स्वप्न' ईरान की सांस्कृतिक, सभ्यता को प्रस्तुत करता है। ईरानी संस्कृति और प्राचीन व्यवस्था का सजीव दार्शनिक चित्रण है। "वहाँ के लोग दिगम्बरा देवी अनाहिता के पूजक है।"[8]

बुद्ध के विचारों की छाप पात्र अन्दर्जगर की मधुर वाणी में प्रतीत होती है। मधुर स्वप्न के पृष्ठों में मानों आज का समाजवादी स्वप्न प्रकट होता है। लाखों लोगों को दास और कमीन बनाकर रखा है । सासनी शासन, दास प्रथा के अधीन हुए लोगों का जीवन प्रस्तुत किया है। दीनधर्म और वर्ग के अनुसार तथा शिष्टाचार एवं सदाचार के नाम पर लोगों को पशु जीवन में डाल

रखा है। लेकिन कब तक यह जाल फरेब चलता रहेगा? इस संदर्भ में मज्जदकी अन्दजर्गर पराये श्रम को लुटनेवाला संसार का विनाश होगा आज नहीं तो कल इस वर्ष नहीं तो सौ वर्ष, हजार पन्द्रह सौ वर्ष बाद यह मायाजाल टूटेगा। 'मधुर स्वप्न' जैसा कि ऊपर कहा गया है, लेखक के जीवन–दर्शन साम्यवादी सिद्धान्तों के आधार पर एक आदर्श समाज की स्थापना के प्रयास का मधुर स्वप्न है। इसी में उपन्यास के नामकरण की सिद्धि है। "यहाँ स्वप्न शब्द का प्रयोग किन्हीं 'बुरे' अर्थों में नहीं किया, महान कार्य की मानसिक पूर्व कल्पना को 'स्वप्न' का नाम दिया गया है। मानव मात्र की वाचिक क्षेत्र ही नहीं बल्कि आर्थिक व्यवहार के क्षेत्र में भी समानता से भूमि पर स्वर्ग उत्तर सकता है, अतएव इस कल्पना को मधुर स्वप्न की अभिधा दी गयी है। इस प्रकार मधुर स्वप्न सारी जनता का मधुर स्वप्न है। अन्दर्जगर स्वर्ग और नरक को अलौकिक जगत की वस्तु नहीं समझते। वह तो सिर्फ आर्थिक विषमता को दूर कर धन के समान विवरण द्वारा नरक को स्वर्ग में परिणत करने का स्वप्न देखते है। जो मज्दक और अन्दर्जगर दोनों आर्थिक वैषम्य को मिटाकर बहुजन हिताय बहुत सुखाय सिद्धांत की स्थापना करते हैं।

निष्कर्ष

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की रचनाओं में मार्क्सवादी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। मार्क्सवादी दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों का विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके साहित्य में समाज की वास्तविकता का गहन चित्रण मिलता है। राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में सामाजिक असमानता, वर्ग संघर्ष, और शोषण के खिलाफ लड़ाई के विषयों को उभारा गया है। वे साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं मानते थे, बल्कि इसे समाज परिवर्तन का एक सशक्त उपकरण मानते थे। उनकी रचनाएँ आम जनता, विशेषकर श्रमिकों और किसानों की दुर्दशा को उजागर करती हैं, और उन्हें एक बेहतर समाज की स्थापना के लिए प्रेरित करती हैं।

हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी दृष्टिकोण का विकास एक महत्वपूर्ण धारा के रूप में उभरा है जिसने साहित्य को सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के प्रति अधिक संवेदनशील और जागरूक बनाया है। इस दृष्टिकोण ने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर उसे सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया है। उनका साहित्य सामाजिक न्याय, समानता और मानवता की ओर प्रेरित करता है। उनके उपन्यासों में मार्क्सवादी दृष्टि का स्पष्ट प्रभाव है, जो समाज की वास्तविकता को उजागर करता है और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करता है। उनके साहित्यिक कार्य समाज के उत्पीड़ित वर्गों की आवाज बनकर सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के खिलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। मार्क्सवादी दृष्टि से लिखी गई हिन्दी साहित्यिक कृतियों ने न केवल साहित्यिक जगत को समृद्ध किया, बल्कि समाज में महत्वपूर्ण बदलाव लाने में भी प्रयास किया। इन रचनाओं ने समाज में व्याप्त असंतोष, असमानताओं के प्रति लोगों को जागरूक किया और शोषण के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। मन्नू भंडारी और निर्मल वर्मा जैसे आधुनिक लेखक भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे और उनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ और वर्ग संघर्ष को प्रमुखता मिली।

संदर्भ

1. राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य, डॉ प्रभा शंकर मिश्र, पृ0 20
2. राहुल सांकृत्यायन– सिंह सेनापति, पृ0 18
3. वहीं पृ0 13
4. वहीं पृ0 14
5. वहीं पृ0 14
6. वहीं पृ0 14
7. वहीं पृ0 93–94
8. राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य –डॉ प्रभाशंकर मिश्र पृ0153
9. राहुल सांकृत्यायनदृसिंह सेनापति, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1951, 2017
10. राहुल सांकृत्यायन दृ मधुर स्वप्न, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, संस्करण 1967
11. राहुल सांकृत्यायन, दर्शन दिग्दर्शन, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1944, नवीन संस्करण, 2017
12. राहुल सांकृत्यायन दृ साम्यवाद ही क्यों?, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 1944, 2018
13. राहुल सांकृत्यायन, दर्शन दिग्दर्शन, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1944, नवीन संस्करण, 2017
14. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली, संस्करण 2010
15. प्रभाशंकर मिश्र – राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1957
16. राहुल सांकृत्यायन–भागो नहीं दुनिया को बदलो– किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, प्रस्तुत संस्करण 2018
17. राहुल सांकृत्यायन–सिंह सेनापति, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1951, 2017
18. राहुल सांकृत्यायन–वोल्गा से गंगा, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 1942, 2018
19. राहुल सांकृत्यायन–मेरी जीवन यात्रा, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1944, नवीन संस्करण, 2017
20. राहुल सांकृत्यायन–नये भारत के नये नेता, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1944, नवीन संस्करण, 201
21. राहुल सांकृत्यायन–कार्ल मार्क्स, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1944, नवीन संस्करण, 2017
22. राहुल सांकृत्यायन– इस्लाम धर्म की रूपरेखा, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2019
23. राहुल सांकृत्यायन– रामराज्य और मार्क्सवाद, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण 1958, 2017
24. राहुल सांकृत्यायन– तुम्हारी क्षय, किताब महल पब्लिशर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 1954, 2018
25. इरफान हबीब– इतिहास और विचारधारा,सरस्वती कॉम्प्लेक्स, सुभाष चौक,लक्ष्मी नगर,दिल्ली संस्करण 2005